स्वच्छ दुग्ध उत्पादन

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र
संयुक्त निदेशालय प्रसार शिक्षा
भाकृअप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर - 243122 (उ0 प्र0)

स्वच्छ दूध क्या है

स्वस्थ दूधारू पशुओं से निकाला हुआ ऐसा दूध जो साफ व सूखे बर्तन में संग्रहित हो, धूल, मक्खियॉ, गोबर व घास जैसी गंदगियों से रहित हो, जिसमें दुध कें प्राकृतिक अवयव एवं स्वाद मौजूद हो, जीवाणुओं की मात्रा कम हो एवं मनुश्य के उपभोग हेतु सुरक्षित हो स्वच्छ दूध कहलाता है।

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन की आवश्यकता

दूध जीवाणुओं के लिए एक उत्तम व पौश्टिक माध्यम है जिसके कारण ठीक से नही रखने पर यह जल्द ही खराब हो जाता है। दूध दोहन, शीतलीकरण व संग्रहण के दौरान दूशित होकर अंततः मनुश्य के लिए अनुपयोगी हो जाता है। अतः दूध की गुणवत्ता संरक्षित रखने हेतु स्वच्छ दुग्ध उत्पादन अति अवश्यक है।

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के तौर–तरीके

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन की रणनीति में दोहनालय का प्रबंधन, पशु स्वास्थ्य प्रबंधन, दूधिया की स्वच्छता, उचित दोहन विधि, दाना व चारे की स्वच्छता, बर्तनों की सफाई और प्रसंसकरण इकाई तक त्वरित परिवहन का प्रबंधन शामिल है।

दोहनशाला का प्रबंधन

- दोहनालय के फर्श को साफ पानी से धो कर उपयुक्त निश्संक्रामक से संक्रमणरहित करना चाहिएं।
- गोशाला की सतह सामान्य भूमि से उपर होना चाहिए ताकि शेड़ से गंदा पानी, मल–मूत्र आसानी से दूर किया जा सके।
- पशुओं को साफ चारा व पानी दें।
- दोहनालय को ऐसा बनाएँ जिसमें कीट, धूल इत्यादि प्रवेश ना करें एवं हवादार हो।

पशु स्वास्थ्य प्रबंधन

- समय–समय पर दुधारू पशुओं में बीमारी की जॉच करवाएँ एवं उन्हे मनुष्यो में दुग्ध के माध्यम से फैलने वाली बीमारियों से मुक्त रखें।
- टीकाकरण द्वारा कई संक्रामक बीमारियों से पशुओं को दूर रखा जा सकता है।
- रोगों का समय पर इलाज किया जाना चाहिए।
- दूध को दूशित करने वाले पदार्थो जैसे गोबर, कीचड़, गंदी बिछाली सामग्री इत्यादि से बचाने के लिए पशुओं की त्वचा को समय–समय पर धोना एवं ब्रुश करना चाहिए।
- थन को लाल दवा (पोटेशियम परमेंगनेट) के घोल से धोकर पौछना चाहिए।

थन में निसंक्रमण घोल का उपयोग

साफ सुथरा थन

दूध दोहने वाले व्यक्ति की स्वच्छता

- दूध दोहने वाले व्यक्ति को स्वस्थ व साफ सुथरा होना चाहिए तथा उसे क्षय रोग (टी.बी.), फ्लू, अतिसार, टाइफाइड इत्यादि बीमारियों से मुक्त होना चाहिए।
- जिस व्यक्ति को संक्रामक रोग हो या उसकी त्वचा में चोट हो तो उसे दूध नही दुहना चाहिए।
- दूध दुहने के पूर्व पशु को नहलाना चाहिए।
- दुहते समय स्वच्छ कपडे पहिनने चाहिऐ।
- दुहने के पूर्व हाथ को अच्छी तरह साबुन व पानी से धोएं व नाखूनों को भली भॉति काट लें।
- साबुन व सूखा तौलिया हमेशा दूध निकालने वाले व्यक्ति के पास होना चाहिए।

दूधारू पशुओं के दोहन के समय निम्न खास बिंदुओं पर ध्यान दे

- दोहन का अंतराल नियमित करें।
- स्वस्थ पशुओं को पहले तथा संभावित बीमार पशुओं का बाद में दोहन करें।

- प्रत्येक पशु के दोहन के पश्चात कपड़ा बदलें या उसे संक्रमणरहित बनाने के लिए निसंक्रमण घोल से धोएँ एवं तभी दूसरे पशु का दोहन शुरू करें।
- अंत में थन को साफ व निसंक्रमण घोल युक्त कपड़े से पोछें।
- पूर्ण हस्त दोहन विधि से दूध निकालें जिससे थनों पर चोट न लग सके एवं थनैला की संभावना कम की जा सके।

पूर्ण हस्त दोहन विधिं

दोहन के समय क्या–क्या नही करें

- पशुओं को उत्तेजित ना करें।
- प्रारंभिक दूध को मुख्य दूध में ना मिलाएँ क्योंकि इसमें जीवाणुओं की मात्रा अधिक पायी जाती है।
- दूध में उंगली न डुबाएँ।
- दोहन करने के लिये झागों का प्रयोग नही करना चाहिए।
- दोहन के दौरान हाथ में तेल न लगाएँ।
- अंगूठा विधि से दोहन ना करें।
- दोहन करते समय थन को जोर से ना खींचे।
- अधूरा दोहन न करें।

दूध निकालने और संग्रह के लिए वर्तन

- दूध निकालने वाले व्यक्ति का पसीना दूध में नही मिलना चाहिए।

पशु आहार एवं पानी की स्वच्छता

- पुराना चारा एवं सब्जियां जैसे गोभी, शलजम, प्याज, लहसुन जो कि दूध के स्वाद में बदलाव करते हैं, का भण्डारण दूर करना चाहिए तथा उन्हे दुधारू पशुओं को नही खिलाना चाहिए।
- आहार में अचानक बदलाव नही करना चाहिए क्योंकि यह दूध की गुणवत्ता को प्रभावित करता है।
- खरपतवार, दूशित पानी और अस्वच्छता आदि दूध में खराब महक के कुछ प्रमुख कारण हैं।
- कीटनाशक से दूध के दूशित होने के खतरे से बचने के लिए तेल रहित खाद्यय पदार्थो का प्रयोग करना चाहिए।

बर्तन

- दूध निकालने और संग्रह करने के लिए उपयोग होने वाले बर्तनों की सतह चिकनी एवं दरार रहित होनी चाहिए।
- दूध के संग्रह के लिए उपयोग होने वाले बर्तनों की अच्छी तरह सफाई करनी चाहिए।
- भण्डारण् हेतु बर्तन में डालने से पहले दूध को सूती कपड़े से छानना चाहिए।

परिवहन

- दोहनालय से दूध को डेयरी प्रसंस्करण इकाई तक पहुचाने की अवधि कम से कम होनी चाहिए।
- गॉव की सोसाइटी और संग्रहकरण केंद्र से डेयरी प्लांट तक दुग्ध का परिवहन जल्द से जल्द होना चाहिए।

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के लाभ

- यह दुग्ध मानव सेवन के लिए सुरक्षित एवं बीमारी फैलाने वाले जीवाणुओं से रहित होता है।
- इसे अधिक समय तक संरक्षित रखा जा सकता है।
- इससे बाजार में उच्च व्यावसायिक कीमत मिलती है।
- इसे लम्बी दूरी तक परिवहन किया जा सकता है।
- यह आधारभूत उत्पाद बनाने के लिए श्रेश्टकारी होता है।

संरक्षण : **डा. राज कुमार सिंह**
निदेशक, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसांधन संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ. प्र.)

मार्गदर्शन : **डा. महेश चन्द्र संयुक्त**
निदेशक, प्रसार शिक्षा (कार्यकारी), भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ. प्र.)

लेखक : **डा. जी.के. गौड़**
प्रधान वैज्ञानिक
डा. पी.के. भारती
वैज्ञानिक,
डा. मुकेश सिंह
प्रधान वैज्ञानिक
डा. वी.के. गुप्ता
वैज्ञानिक
डा. त्रिवेणी दत्त
प्रधान वैज्ञानिक, पशुधन प्रबन्धन विभाग

संपादन : **डा. रूपसी तिवारी**
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसधांन संस्थान, इज्जतनगर–243122 (उ. प्र.)

अधिक जानकारी हेतु संपर्क

आई.वी.आर.आई. हेल्पलाइन : 0581-2311111

किसान कॉलसेन्टर : 1800-180-1551

आई.वी.आर.आई. बेवसाइट : www.ivri.nic.in